प्रातः क्लास 8/12/68 ओम शान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। मीठे-2 बच्चे यहाँ बैठकर समझते हैं इनमें जो शिवबाबा आए हैं, कैसे भी करके हमको साथ घर ज़रूर ले जावेंगे। वह आत्माओं का घर है ना। तो बच्चों को ज़रूर खुशी होती होगी। बेहद का बाप आ करके हमको गुल-2 बनाते हैं। कोई कपड़ा आदि नहीं पहनाते हैं। इसको कहा जाता है योगबल। याद का बल। जितना-2 टीचर का मर्तबा है, उतना और बच्चों को भी मर्तबा दिलाते हैं पढ़ाई से। स्टूडेंट जानते हैं हम टीचर से फलाना बनते हैं। तुम भी समझते हो हमारा बाबा टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह है नई बात। हमारा बाबा टीचर है, उनको हम याद करते हैं, हमको पढ़ाकर यह बना रहे हैं। हमारा बेहद का बाबा आया हुआ है। हमको वापस घर ले जाते हैं। रावण का कोई घर नहीं होता। घर राम का होता है। बाप वहाँ रहते हैं। शिवबाबा कहाँ रहते हैं? तुम झट कहेंगे, परमधाम में। रावण को तो बाबा नहीं कहेंगे। रावण कहाँ रहते हैं? पता नहीं। ऐसे नहीं कहेंगे रावण परमधाम में रहते हैं। नहीं। उनका जैसे कि ठिकाना ही नहीं है। भटकता रहता है। तुमको भी भटकाता है। तुम कब रावण को याद करते हो क्या? नहीं। कितना तुमको भटकाते हैं। शास्त्र पढ़ो, भक्ति करो, यह करो। बाप कहते हैं इसको कहा जाता है भक्तिमार्ग। रावण राज्य। गाँधी भी कहते थे राम-राज्य चाहिए, गोया रावण राज्य है। तो बच्चे देखते हैं इस रथ में हमारा बाबा आया हुआ है। बड़ा बाबा है ना। वह आत्माओं से बच्चे-2 कह बात करते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है रूहानी बाप और रूहानी बाप की बुद्धि में हो तुम रूहानी बच्चे; क्योंकि हमारा कनेक्शन है ही मूलवतन का। आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... वहाँ तुम आत्माएँ बाप के साथ इकट्ठे रहते हो। फिर अलग होते हो अपना-2 पार्ट बजाने। बहुकाल का हिसाब भी चाहिए ना। वह बाप बैठ बतलाते हैं। तुम अभी पढ़ाई पढ़ रहे हो। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं, वही पहले-2 मेरे से जुदा होते हैं। वही फिर मुझे बहुत याद करेंगे, तो फिर पहले-2 आ जावेंगे। तुम वहाँ जाते हो, जोड़ी तो ज़रूर मिलती ही है। प्रवृत्तिमार्ग है ना। यह सम्बन्ध देखो कैसा है। बाप बैठ बच्चों को सारी सृष्टि–चक्र का गुह्यतम राज़ समझाते हैं, जो और कोई भी नहीं जानते। गुह्य भी कहा जाता है, गुह्यतम भी कहा जाता है। यह भी जानते हो बाप कोई ऊपर से नहीं बैठ समझाते हैं। यहाँ आकर समझाते हैं। मैं इस कल्प-वृक्ष का बीजरूप हूँ। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ को कल्प-वृक्ष कहा जाता है। दुनिया के मनुष्य तो बिल्कुल ही कुछ नहीं जानते। कुम्भकरण के नींद में सोये हुए हैं। फिर बाप आकर जगाते हैं। अभी तुम बच्चों को जगाया है। और सभी सोये पड़े हैं। तुम भी कुम्भकरण के आसुरी नींद में सोये पड़े थे। बाप ने आकर जगाया है। बच्चों! जागो, तुम गाफ़िल हो सोये पड़े हो। उनको कहा जाता है अज्ञान नींद। वह नींद तो सभी करते हैं। सतयुग में भी करते हैं। अभी सभी हैं अज्ञान की नींद में। बाप आकर ज्ञान से सभी को जगाते हैं। अभी तुम बच्चे जागे हो। जानते हो बाबा आया हुआ है हमको ले जावेगा। अभी तो न यह शरीर काम का रहा, न आत्मा। दोनों ही पतित बन पड़ी हैं। एकदम मुलमी का है। 9 कैरेट कहें अर्थात बहुत कम सोना। सच्चा सोना 24 कैरेट का होता है। अभी बाप तुम बच्चों को 24 कैरेट में ले जाने चाहते हैं। तुम्हारी आत्मा को सच्चा-2 गोल्डन एज्ड बनाते हैं। भारत को सोने की चिड़िया कहते थे। अभी तो है लोहे की, ठिक्कर-भित्तर की चिड़िया कहेंगे। है तो चैतन्य ना। यह समझने की बातें हैं। जैसे आत्मा को समझते हो वैसे बाप को भी समझ सकते हो। कहते भी हैं चमकता (है) सितारा। बहुत छोटा सितारा है। डॉक्टरों आदि ने बहुत कोशिश की है देखने की; परन्तु दिव्य दृष्टि बिगर देख नहीं सकते। बहुत सूक्ष्म है। कोई कहते हैं आँखों से आत्मा निकल गई। कोई कहते मुख से निकल गई। आत्मा निकलकर जाती है कहाँ? दूसरे के तन में जाकर प्रवेश करती है। अभी तुम्हारी आत्मा ऊपर में चली जावेगी। शांतिधाम। यह पक्का मालूम है। बाप आकर हमको घर ले जावेंगे। एक तरफ हैं कलियुगी, दूसरे तरफ हैं सतयुगी। अभी हम संगम पर खड़े हैं। वण्डर है यहाँ 500 करोड़ मनुष्य हैं और वहाँ (सतयुग में) सिर्फ नौ लाख। क्या हुआ? विनाश हो जाता है। बाप आते ही है नई दुनिया की स्थापना करने। ब्रह्मा द्वारा स्थापना होती है ना।

फिर पालना भी होती है दो रूप में। ऐसे तो नहीं 4 भुजा वाले कोई मनुष्य होंगे। फिर तो शोभा ही न हो। सो भी न सके। बच्चों को यह भी समझा देते हैं चतुर्भुज है श्री ल॰, श्री ना॰ का कम्बाइण्ड रूप। श्री अर्थात श्रेष्ठ। त्रेता में दो कला कम हो जाते हैं। तो बहुतों को यह नॉलेज अभी मिलती है। तो इसी स्मृति में रहो। मुख्य है ही दो अक्षर। बाप को याद करो। बस। सभी को बाप कहते हैं बेहद के बच्चों, बेहद के रूहों, शालीग्रामों, बाप को याद करो। दूसरे कोई के समझ में नहीं आवेगा। बाप ही पतित-पावन, सर्वशक्तिवान है। गाते भी हैं बाबा आपने हमको सारा आसमान-धरती, सभी कुछ दे दिया, ऐसी कोई चीज़ नहीं जो न दी हो। सारे विश्व का राज्य दे दिया है। तुम जानते हो यह ल॰ना॰ विश्व के मालिक थे। फिर ड्रामा का चक्र फिरता रहता है। सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। यह भी जानते हो विकारी से निर्विकारी, निर्विकारी से विकारी, यह 84 जन्मों (का) पार्ट अनगिनत बार बजाया है। इसकी गिनती कर न सके। आदमशुमारी भी गिनती करते हैं बाकी यह जो तमो, तमोप्रधान से सतोप्रधान, सतोप्रधान से तमोप्रधान बनते हो। इनका हिसाब नहीं निकाल सकते कि कितना बार बने हो। बाबा कहते हैं 5000 वर्ष का यह चक्र है। लाखों वर्ष की बात तो याद रह भी न सके। अभी तुम्हारे में ज्ञान धारण होती है। तीसरा ज्ञान का नेत्र मिल जाता है। यह खत्म हो जाता है। इन आँखों से तुम पुरानी दुनिया देखते हो, तीसरा नेत्र जो मिलता है उनसे नई दुनिया को देखना है। यह दुनिया तो कोई काम की नहीं है। पुरानी दुनिया है। नई दुनिया और पुरानी दुनिया में फर्क देखो कितना है। तुम जानते हो हम ही नई दुनिया के मालिक थे। फिर 84 जन्म लेते-2 यह बने हैं। यह अच्छी रीत याद रखना चाहिए और फिर दूसरों को भी समझाना है, कैसे हम यह बनते हैं। विष्णु को फिर पुनर्जन्म लेते-2 पतित बनते ब्रह्मा बनते हैं। फिर ब्रह्मा सो विष्णु बनते हैं। ब्रह्मा और विष्णु का फर्क देखते हो ना। विष्णु कैसा सजा सजाया बैठा है। यह ब्रह्मा कैसे साधारण बैठा है। तुम जानते हो यह ब्रह्मा, वह विष्णु बनने वाले हैं। यह किसको समझाना भी बहुत सहज है, ब्रह्मा, विष्णु, शंकर का आपस में क्या ताल्लुक है। तुम जानते हो यह विष्णु के दो रूप ल॰ना॰ हैं। यही विष्णु देवता सो ब्रह्मा मनुष्य बनते हैं। वह विष्णु सतयुग का है, ब्रह्मा यहाँ का है। बाप ने समझाया है ब्रह्मा से विष्णु बनने में सेकण्ड लगता है, फिर विष्णु से ब्रह्मा बनने में 5000 वर्ष लगते हैं। तत त्वम्। ब्रह्मा एक तो नहीं बनते हैं ना। यह बातें सिवाय बाप के और कोई समझा न सके। यहाँ कोई मनुष्य गुरु की बात नहीं। इनका भी गुरु शिवबाबा है। तुम ब्राह्मणों का भी गुरु शिवबाबा है। उनको ही सद्गुरु कहा जाता है। तुम बच्चों को शिवबाबा को ही याद करना है। कोई को भी यह समझाना तो बहुत सहज है। शिवबाबा को याद करो, शिवबाबा स्वर्ग नई दुनिया रचते हैं। ऊँच ते ऊँच भगवान शिव है। वह है हम सभी आत्माओं का बाप। तो भगवान बच्चों को कहते हैं मुझ बाप को याद करो। कितना सहज है। बच्चा पैदा होता है और झट माँ-माँ उनके मुख से आपे ही निकलता है। माँ-बाप के सिवाय और कोई पास नहीं जावेंगे। हाँ, कोई हिर जाते हैं वह फिर और बात है। माँ और बाप दो का खेल है ना। मेल-फिमेल। फिर पीछे और मित्र-संबंधी आदि होते हैं। उसमें भी जोड़ी-2 होंगे। चाचा-चाची..... दो का खेल है ना। कुमारी होगी फिर बड़ी होने से कोई उनको चाची कहेंगे, कोई मामी कहेंगे..... अभी तुम(को) बाप समझाते हैं तुम सभी भाई-2 हो। बस। और सभी सम्बंध कैंसिल करनी है। भाई-2 समझेंगे तो एक बाप को याद करेंगे। बाप भी कहते हैं बच्चों मुझ एक बाप को याद करो। कितना बड़ा बेहद का बाप है। वह बड़ा बाबा तुमको बेहद का वर्सा देने आए हैं। घड़ी-2 कहते हैं मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह बात भूलो मत। देह-अभिमान (से) ही भूल होती है। पहले-2 तो अपन को आत्मा समझना है। हम आत्मा शालीग्राम हैं। बाप को ही याद करना है। बाप ने समझाया है मैं पतित-पावन हूँ। मुझे याद करने से तुम्हारी बैटरी जो खाली हो गई वह भरपूर हो सतोप्रधान बन जावेगी। पानी की गंगा में तो जन्म-जन्मांतर घुटका खाया, पावन बन न सके।

पानी कैसे पतित पावनी हो सकता? ज्ञान से ही सद्गति होती है। पानी से कैसे सद्गति होगी। बहुत बेसमझी है। अभी तुम समझते हो हम रावण सम्प्रदाय के मत पर जो सुनते थे सभी सत्य-2 कहते थे। अभी वह असत्य निकल पड़ा। ईश्वर सर्वव्यापी कहना असत्य हुआ ना। गीता का भगवान कृष्ण है, असत्य है ना। जो सत्य जानते थे वह सभी असत्य निकल पड़ी। यह है ही पापात्माओं की झूठी दुनिया। लेन-देन भी पापात्माओं से होता है। मनसा-वाचा-कर्मणा पापात्मा ही बनते हैं। यह है ही झूठ खण्ड। अर्थात् जो मनुष्य हैं वह झूठ बोलते हैं। सद्गुरु को ही सत्य कहा जाता है। सतयुग है सच खण्ड। सच्चे देवताओं के आगे झूठ खण्ड वाले मनुष्य माथा टेकते हैं। कितने ढेर मंदिर हैं। जहाँ मनुष्य अच्छा मंदिर देखते हैं वहाँ दौड़ते हैं। बेसमझ थे ना। आगे मुसलमान लोग भगाकर ले जाते थे इसलिए पुरुष लोग स्त्रियों को कहते थे ल॰ना॰ के मंदिर में जो मूर्ति है वह मूर्ति घर में भी रख दो, फिर मंदिर में जाने की क्या दरकार है। बाहर जाने से रोकते थे। फर्स्ट क्लास चित्र बनाकर घर में रख दो। बात तो एक ही है। आगे चित्र बहुत फर्स्ट क्लास बनते थे। चीज़ तो वही होती है। अभी तुम बच्चों को समझ मिली है। तुम कहते हो हम यह बनने लिए पुरुषार्थ करते हैं। अभी तुम्हारी भक्ति बन्द है। ज्ञान से सद्गति होती है। यह सद्गति में है ना। विष्णु सद्गति, ब्रह्मा दुर्गति। बाप ने समझाया है यह बहुत जन्मों के अन्त में है ना। दुर्गति में है ना। बाप कितना सहज समझाते हैं। तुम बच्चियाँ कितनी मेहनत करती हो। कल्प-2 करते हो। पुरानी दुनिया को बदल नई दुनिया बनानी है। कहते हैं ना भगवान जादूगर है, रत्नागर है, सौदागर है। जादूगर तो है ना। पुरानी दुनिया हेल को बदल हेविन बना देते हैं। कितना जादू है! अभी तुम हेविन के रहवासी बन रहे हो। जानते हो अभी हम हेल के रहवासी हैं। हेल और हेविन अलग हैं। 5000 वर्ष का चक्र है। लाखों वर्ष की बात ही नहीं। यह बातें भूलनी न चाहिए। भगवान खुद मुख से डायरैक्शन देते हैं। भगवानुवाच है ना। कोई ज़रूर है जो पुनर्जन्म रहित है। कृष्ण को तो शरीर है। शिव को है नहीं। उनको मुख तो ज़रूर चाहिए तुमको सुनाने लिए। आकर पढ़ाते हैं ना। ड्रामा अनुसार सारी नॉलेज उनके ही पास है। वह सारे कल्प में एक ही बार आते हैं दुखधाम को सुखधाम बनाने। सुख-शान्ति का वर्सा ज़रूर बाप से ही मिला है तब तो उनको चाहते हैं ना। बाप को याद करते हैं। देहली में जो तार भेजी गई थी। उनमें बहुत अच्छा ज्ञान था किसको समझाने का। इस महाभारी–महाभारत लड़ाई के बाद ही विश्व में शांति स्थापन होगी। बाप करा रहे हैं ब्राह्मणों द्वारा। ब्राह्मणों के पीछे हैं देवताएँ। विराट रूप का चित्र भी है ना। बाप ज्ञान देखो कैसे सहज रीति देते हैं। यहाँ बैठे भी बाप को याद करो। बाजोली याद करो तो मन्मनाभव है। बाप ही यह सारा ज्ञान देने वाला है। तुम कहेंगे हम बेहद के बाप के पास जाते हैं। बाप हमको शान्तिधाम-सुखधाम जाने का रास्ता बताते हैं। यहाँ बैठे घर को याद करना है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करना है। घर को य(ा)द करना है और नई दुनिया याद करना है। यह पुरानी दुनिया तो खत्म होनी ही है। आगे चलकर तुम वैकुण्ठ को बहुत याद करेंगे। घड़ी-2 वैकुण्ठ में जाते रहेंगे। शुरू में बच्चियाँ घड़ी-2 आपस में बैठ वैकुण्ठ में चली जाती थीं। यह देखकर बड़े-2 घर वाले अपने बच्चों को भेज देते थे। नाम ही रखा था ओम निवास। कितने ढेर बच्चे आए हैं। फिर हंगामा हुआ। बच्चों को पढ़तो(पढ़ाते) भी थे। आपे ही ध्यान में चली जाती थीं। अभी यह ध्यान-दीदार का पार्ट बंद कर दिया है। यहाँ भी कब्रिस्तान बना देते थे। सभी को सुला देते थे। कहते थे अब शिवबाबा को याद करो। ध्यान में ...ले जाते थे। अभी तुम बच्चे भी जादूगर हो। किसको भी देखेंगे और वह झट ध्यान में चले जावेंगे। यह जादू(गर) कितना अच्छा है। नौधा भक्ति में तो जब एकदम प्राण देने तैयार होते हैं तब उनको दीदार होता है। यहाँ तो बाप खुद ही आए हैं, तुम बच्चों को पढ़ाकर ऊँच पद प्राप्त कराते हो(हैं)। आगे चल तुम बच्चे बहुत सा॰ करते रहेंगे। जिसका जो पद होगा वह सा॰ करते रहेंगे। बाप से ही अभी भी कोई पूछे तो बता सकते हैं, कौन गुलाब का फूल है, कौन चम्पा का फूल है, कौन टांगर है। टूह भी होते हैं ना। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।